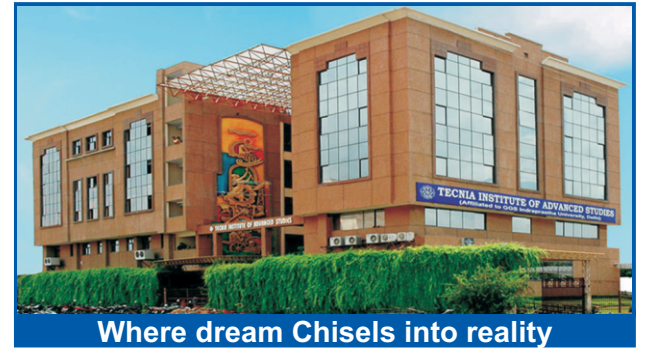


Youngster



YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • OCTOBER 2022 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

टीआरपी के जाल में फंसा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

हमारे देश में टीवी न्यूज़ की शुरुआत दूरदर्शन से हुई थी। अस्सी के दशक में दूरदर्शन की लोकप्रियता घर-घर में पहुंची। उसके साथ ही दूरदर्शन के न्यूज़ बुलेटिन भी लोकप्रिय होने लगे। हमारे देश में ऐसा पहली बार था जब लोगों ने लाइव तस्वीरों के साथ न्यूज़ देखना शुरू किया। विजुअल्स का दिखना ही उस समय बड़ी बात होती थी। मनोरंजन के कार्यक्रमों के बीच देर शाम आने वाले न्यूज़ बुलेटिन जल्द ही लोगों की दिनचर्या का हिस्सा सा बन गए। इससे पहले सिर्फ अखबारों के माध्यम से ही लोगों तक खबरें पहुंचती थी। उसके बाद रेडियो ने लोगों तक खबरें पहुंचायीं। लेकिन रेडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का हिस्सा होने के बाद भी सिर्फ ऑडियो माध्यम था। टीवी ने पहली बार लोगों तक ऑडियो-विजुअल माध्यम से खबरें पहुंचायीं। विजुअल माध्यम को लोगों के दिल-दिमाग तक पहुंचने का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। अखबारों से खबरें जानने के लिए लोगों को पढ़ना आना चाहिए। लेकिन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, बिना पढ़ना-लिखना जानने वाले लोगों के लिए भी उतना ही उपयोगी है। इसमें भी रेडियो के मुकाबले टीवी की धाक ज्यादा मानी जाती है क्योंकि देखी गयी तस्वीरें लोगों के दिमाग में बस जाती हैं।

दूरदर्शन पर न्यूज़ बुलेटिन की लोकप्रियता

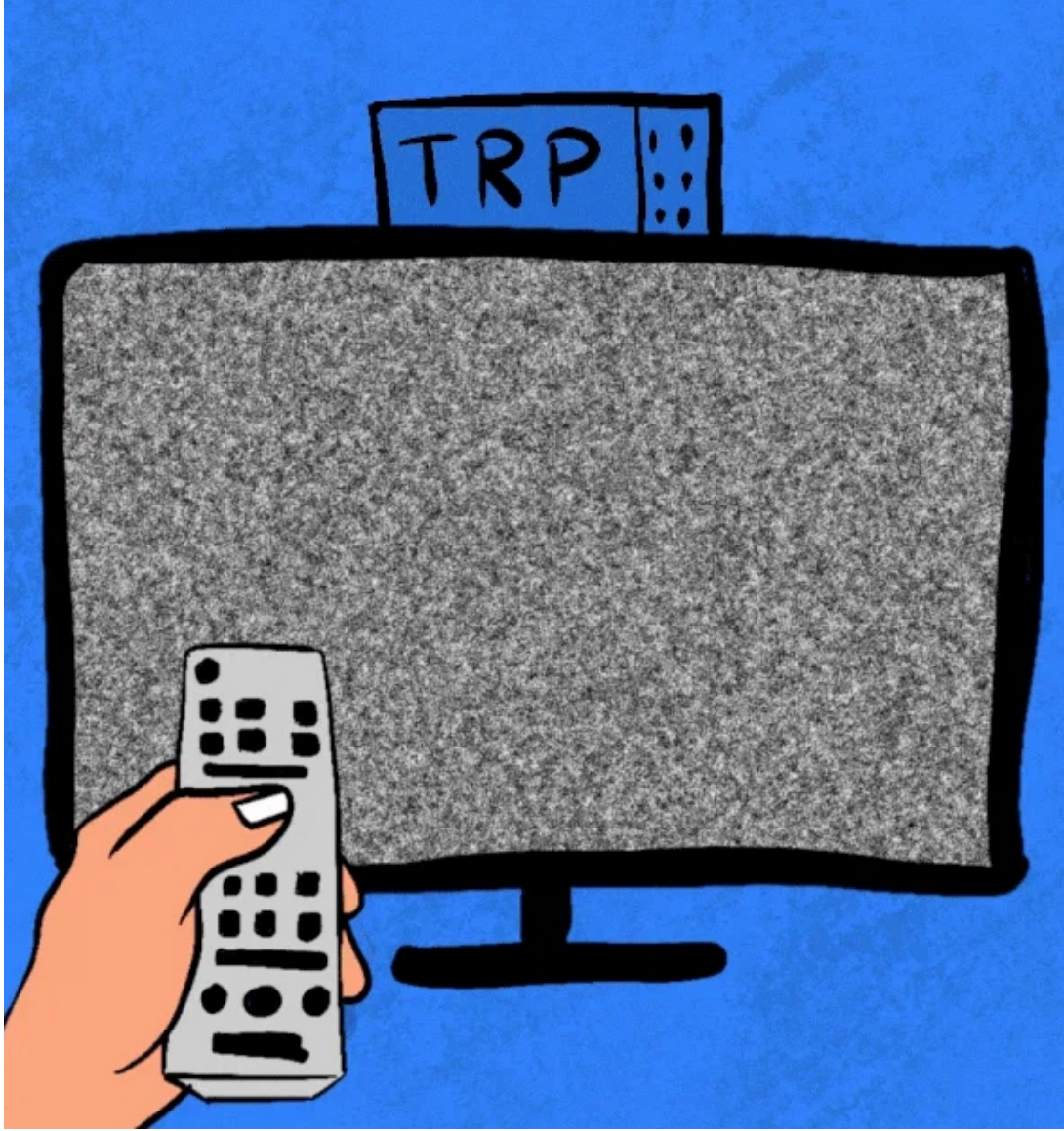
दूरदर्शन से पहला टीवी प्रसारण सन् 1959 ई. में हुआ था। इसके 6 वर्ष बाद दूरदर्शन ने अपना पहला न्यूज़ बुलेटिन प्रसारित किया था जिसकी अवधि 5 मिनट थी। सन् 1982 में दिल्ली एशियाड के सीधे प्रसारण से देश में दूरदर्शन के राष्ट्रीय प्रसारण की शुरुआत हुई। इसके साथ ही दूरदर्शन के रंगीन प्रसारण की भी शुरुआत इसी साल हुई। धीरे-धीरे अपने धारावाहिकों और अन्य कार्यक्रमों की लोकप्रियता की वजह से टीवी देश के घर-घर में पहुंच गया। टीवी की लोकप्रियता उस वक्त शिखर पर थी। टीवी ने लोगों की शाम बिताने की आदत बदल ली। अब शाम का ज्यादातर वक्त टीवी के सामने गुजरने लगा। इसी दौरान देर शाम आने वाले दूरदर्शन के न्यूज़ बुलेटिन भी लोकप्रियता का आसमान छूने लगे। उस वक्त दूरदर्शन के न्यूज़ बुलेटिन बहुत ही साधारण हुआ करते थे। कई बार तो न्यूज़ रीडर सिर्फ खबरों को पढ़ दिया करता था। लेकिन फिर भी अकेला माध्यम होने की वजह से ये न्यूज़ बुलेटिन घर-घर में देखे जाते थे। उस वक्त के न्यूज़ रीडरों की लोकप्रियता भी चरम पर थी। सलमा सुलताना, मंजरी जोशी, शम्मी नारंग जैसे कई नाम लोगों के जुबां पर थे। इन न्यूज़ रीडर्स की लोकप्रियता की तुलना आज के एंकर्स से नहीं की जा सकती। इन सबको एक स्टार जैसा रूतबा लोगों के बीच हासिल था।

कांग्रेस सरकार का भौंपू बना दूरदर्शन न्यूज़

लेकिन फिर दूरदर्शन धीरे-धीरे कांग्रेस सरकार के प्रचार तंत्र की तरह काम करने लगा। राजीव गांधी जब प्रधानमंत्री थे, उस वक्त तो दूरदर्शन का नाम ही मजाक में पीएम दर्शन पड़ गया था। दूरदर्शन के हर न्यूज़ बुलेटिन की शुरुआत प्रधानमंत्री के दोरों और उनके भाषणों से ही होती थी। इसी दौरान दूरदर्शन का नाम बुद्ध बक्सा या इडियट बॉक्स पड़ा। दूरदर्शन के न्यूज़ धीरे-धीरे सरकार के प्रचार का जरिया बन कर रह गए। सरकार विरोधी खबरें दूरदर्शन पर दूर-दूर तक नहीं दिखती थी। दूरदर्शन के न्यूज़ की निष्पक्षता पर सवाल उठने लगे थे।

प्राइवेट चैनलों का दौर

इसके बाद भूमंडलीकरण के दौर की शुरुआत हुई। भारत में न्यूज़ चैनलों का चेहरा भी बदला। सबसे पहले डीडी मेट्रो पर इंडिया टुडे ग्रुप ने आधे घंटे के न्यूज़ बुलेटिन की शुरुआत की। आजतक नाम के इस न्यूज़ बुलेटिन को सुप्रसिद्ध पत्रकार सुरेन्द्र प्रताप सिंह प्रस्तुत करते थे। इस न्यूज़ बुलेटिन ने लोगों को बीच जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। लोगों के बीच एसपी के नाम से लोकप्रिय सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने टीवी पत्रकारिता की नयी परिभाषा लिखी। बुलेटिन के अंत में उनके द्वारा बोले जाने वाली टैगलाइन थी- "ये थी खबरें आज तक, इंतजार कीजिए कल तक"। एसपी की ये टैगलाइन भी खूब चर्चित हुई और आजतक लोगों के जेहन में बसी है। बाद में सन् 1999 में आज तक ने खुद का 24 घंटे का न्यूज़ चैनलों भी शुरू किया।



स्टार न्यूज़, जी न्यूज़ जैसे अन्य भारतीय न्यूज़ चैनलों भी प्राइवेट न्यूज़ चैनलों की फेहरिस्त का हिस्सा था। बाद में एनडीटीवी, सहारा समय, इंडिया टीवी, न्यूज़24 जैसे कई प्रसिद्ध नाम इस लिस्ट में जुड़े।

न्यूज़ चैनलों से पहले प्राइवेट मनोरंजन चैनलों का दौर शुरू हो चुका था। सन् 1992 में जी टीवी ने पहला चैनलों शुरू किया था। जी ने बाद में जी न्यूज़ के नाम से न्यूज़ चैनलों भी शुरू किया। इसके साथ ही स्टार टेलिविजन नेटवर्क ने भी कई चैनलों हमारे देश में शुरू किए। न्यूज़ चैनलों में लोगों को पहली बार बीबीसी और सीएनएन जैसे चैनल अपने देश में लाइव देखने को मिले। स्टार ने प्रणव राय की कंपनी एनडीटीवी के साथ मिलकर स्टार न्यूज़ की शुरुआत की। हालांकि बाद में स्टार न्यूज़ और एनडीटीवी की राह अलग-अलग हो गयी और दोनों ने अपने अलग न्यूज़ चैनल चलाए। स्टार न्यूज़ को बाद के दौर में अमृत बाजार पत्रिका ग्रुप ने ले लिया और इसका नाम एबीपी न्यूज़ कर दिया गया।

प्राइवेट न्यूज़ चैनलों ने दूरदर्शन की पत्रकारिता से अलग राह पकड़ी। लोगों को टीवी न्यूज़ की असल ताकत पता चली। ब्रेकिंग खबरों का दौर चला। लोगों के बीच सबसे पहले खबर पहुंचाने की होड़ चली। सरकारी भौंपू की तरह बजने वाले दूरदर्शन पर बासी खबरें देख-देख कर बोर हो रहे दर्शकों के लिए ये सब कुछ किसी ताजा हवा के झोंके जैसा था।

न्यूज़ चैनलों का सुनहरा दौर

21वीं सदी का पहला दशक प्राइवेट न्यूज़ चैनलों के लिए स्वर्णिम काल माना जाएगा। इस दौरान कई बड़े न्यूज़ चैनलों ने खुद को जनता के प्रतिनिधि के तौर पर प्रस्तुत किया। जनसरोकार की खबरें लोगों तक पहुंचायी गयीं। कई बार इलेक्ट्रॉनिक चैनलों की साझा मुहिम ने सरकार को अपना रुख बदलने पर मजबूर किया। विजुअल्स और उसके प्रस्तुतिकरण में नए प्रयोग किए गए। कई नए मिजाज के कार्यक्रम दर्शकों के बीच खासे लोकप्रिय रहे। लोगों के बीच न्यूज़ चैनलों की विश्वसनीयता बरकरार रही। ऐसी ऐसी खबरें लोगों को न्यूज़ चैनलों पर लाइव देखने को मिली जिसके बारे में सोचा भी नहीं गया था। कई स्टिंग भी सामने आए और कई भ्रष्टाचारियों पर नकेल कसी गयी।

व्यवसाय बनती पत्रकारिता

लेकिन इसी दौरान अंदर ही अंदर बहुत कुछ बदल रहा था। शुरुआत दरअसल पत्रकारिता के बदलते पैमानों के साथ ही हो चुकी थी। अखबारों में संपादक जैसी संस्था कमजोर पड़ने लगी

थी। मैनेजर्स अब धीरे-धीरे अखबारों पर हावी होने लगे थे। अखबार को नए दौर में प्रोडक्ट समझा जाना लगा था। पत्रकारिता पर व्यवसायिकता हावी हो गयी थी। पत्रकारिता अब मिशन नहीं सिर्फ प्रोफेशन रह गयी थी।

टीवी चैनलों पर व्यवसायिकता का जोर अखबारों से कहीं ज्यादा दिखा। टीवी चैनलों को चलाना अखबारों से कई गुना ज्यादा खर्चीला था और ऐसे में इनसे लाभ पाने की उम्मीदें भी इन चैनलों के मालिकों को ज्यादा थी। वो दौर आ चुका था जब व्यवसाय बन चुकी पत्रकारिता में कोई भी न्यूज़ चैनलों को घाटे में चलाने के लिए तैयार नहीं था। न्यूज़ चैनलों की आमदनी का सबसे बड़ा जरिया थे - विज्ञापन। लेकिन विज्ञापनों की डोर बंधी थी टीआरपी के साथ। टीआरपी यानि टेलिविजन रेटिंग पाइंट। ये एक नया जुमला था जो न्यूज़ चैनलों के लिए संजीवनी बन चुका था। जिस चैनलों की टीआरपी जितनी ज्यादा, उस चैनलों को मिलने वाले विज्ञापन और आमदनी भी उतनी ही ज्यादा।

क्या है टीआरपी?

दरअसल हमारे देश में टीआरपी नापने का काम बार्क(BARC) करता है। Broadcast Audience Research Council यानि बार्क इंडिया एक संयुक्त उद्योग उपक्रम है जिसमें प्रसारणकर्ता, विज्ञापनदाता और मीडिया एजेंसी का प्रतिनिधित्व करने वाले स्टॉकहोल्डर मिलकर चलाते हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा टेलिविजन मेजरमेंट निकाय है।

बार्क कई हजार फ्रीक्वेंसी का डेटा लेकर पूरे टीवी चैनलों की टीआरपी का अनुमान लगाती है। इसके लिए पूरे देश में कुछ दर्शकों को सैंपल के तौर पर रखा जाता है। इनके घरों में टीवी सेट में स्पेशल गैजेट, जिसे बैरोमीटर कहते हैं, लगे रहते हैं जो दर्शकों के देखे जाने वाले कार्यक्रमों की गणना कर ये पता लगाता है कि कौन सा चैनलों और कौन सा कार्यक्रम सबसे ज्यादा देखे जा रहे हैं। माना जाता है बार्क ने पूरे देश में करीब 45 हजार घरों में ये बैरोमीटर लगाए हैं, जो पूरे देश की टीआरपी तय करते हैं।

टीआरपी पर उठते रहे हैं सवाल

हालांकि टीआरपी शुरू से ही सवालों के दायरे में रही है। हाल ही में हुए टीआरपी घोटाले ने इसके बारे में शक को और गहरा कर दिया है। ऐसे आरोप लगते रहे हैं कि टीआरपी से छेड़-छाड़ की जा सकती है और इसे प्रभावित किया जा सकता है। पूरे देश के लिए इस सैंपल साइज को बहुत छोटा माना जाता है और इससे कार्यक्रमों की सफलता या असफलता तय करने पर भी सवाल खड़े होते रहे हैं। कई बार ऐसे भी आरोप लगते रहे हैं कि जिन दर्शकों के घर पर बैरोमीटर लगे होते हैं चैनलों उनके बारे में पता लगाकर उन्हें प्रभावित कर लेते हैं और अपने पक्ष में टीआरपी लेते आते हैं।

टीआरपी के जाल में फंसे चैनलों

लेकिन फिर भी टीआरपी विज्ञापनदाताओं के लिए महत्वपूर्ण होती है और यही माना जाता है कि जिसकी टीआरपी जितनी ज्यादा है वो उतना ज्यादा देखा जा रहा है। इसी से टीवी न्यूज़ चैनलों की आमदनी तय होती है।

ऐसे में टीआरपी लाने के लिए न्यूज़ चैनलों किसी हद तक जाने को तैयार दिखते हैं। टीआरपी लाने का मतलब है दर्शक को किसी भी तरह अपने चैनलों पर रोक कर रखना। इसके लिए न्यूज़ चैनलों ने हर दांव-पैतरे आजमाए। पर्दे पर सनसनी परोसना, भूत-प्रेत जैसी अविश्वसनीय कहानियां को सच बताकर दिखाना, नाग-नागिन के जोड़े का महिमा बखान करना या फिर सास-बहू के झगड़े को राष्ट्रीय चैनलों पर लाइव दिखाना - ऐसे कई उदाहरण रहे जब न्यूज़ चैनलों ने खुद को हंसी का पात्र बना लिया। यहीं कारण रहा कि टीआरपी की इस रेस ने न्यूज़ चैनलों की विश्वसनीयता पर ही सवाल खड़े कर दिए।

लिथियम-आयन बैटरी विनिर्माण सुविधा स्थापित करेगा सीएसआईआर

कम्प्यूटर और मोबाइल फोन के साथ-साथ अन्य उपकरणों में लिथियम आयन बैटरियों का उपयोग एक अनिवार्य आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए भारत को चीन और दक्षिण कोरिया जैसे देशों से लिथियम आयन बैटरियों का आयात करना पड़ता है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) अब चेन्नई में लिथियम-आयन बैटरी निर्माण सुविधा का निर्माण कर रहा है। सीएसआईआर की इस पहल से लिथियम बैटरियों के आयात पर भारत की निर्भरता कम करने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। तमिलनाडु के कारैकुडी में स्थित सीएसआईआर की घटक प्रयोगशाला केंद्रीय विद्युत रासायनिक अनुसंधान संस्थान (सीईसीआरआई) द्वारा लिथियम आयन बैटरी विनिर्माण की यह सुविधा तारामणि (चेन्नई) स्थित सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स में स्थापित की जा रही है। सीएसआईआर-सीईसीआरआई इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री के क्षेत्र में कार्यरत एक प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संस्थान है। बताया जा रहा है कि वर्तमान में उपयोग की जाने वाली ली-आयन बैटरियों की तुलना में इस संयंत्र में निर्मित बैटरियों का जीवनकाल लगभग 5 से 10 गुना अधिक होगा। मौजूदा बैटरियों की तुलना में यहाँ निर्मित होने वाली बैटरियाँ आकार में भी छोटी होंगी।

सीईसीआरआई के निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) डॉ. के. जे. श्रीराम ने कहा है कि "मूल रूप से नई प्रौद्योगिकी होने के कारण, हम इसे उद्योगों के लिए बड़े पैमाने पर प्रदर्शित करना चाहते हैं, ताकि उन्हें इस प्रौद्योगिकी को अपनाने में कोई कठिनाई न हो।"

सीएसआईआर के शोधकर्ता ली-आयन बैटरी में उपयोग किए जाने वाले दुर्लभ धातु-तत्वों के



निष्कर्षण की भी देख-रेख कर रहे हैं। डॉ. श्रीराम ने कहा है कि "दक्षिण भारत के हमारे अधिकांश समुद्र तटों में मोनाज़ाइट रेत है, जो दुर्लभ मृदा-धातुओं का एक अच्छा स्रोत है। अपनी विनिर्माण-क्षमता में वृद्धि के लिए हम भारत में ही उसकी सामग्री का स्रोत बनाने में सक्षम होंगे।"

यह संयंत्र, जिसके वर्ष 2024 तक तैयार होने की उम्मीद है, एक दिन में लगभग 1,000 बैटरी की उत्पादन-क्षमता से लेस होगा। इस विनिर्माण सुविधा केंद्र में उत्पादित बैटरियाँ मुख्य रूप से उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोगों पर केंद्रित होंगी।

बताया जा रहा है कि सीईसीआरआई उद्योगों को इस प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित करने और

प्लग-एंड-प्ले सेवा की पेशकश करने के लिए इस सुविधा में निजी क्षेत्र को शामिल करने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है।

वर्तमान में, सीएसआईआर-सीईसीआरआई अपनी ली-आयन बैटरी फैब्रिकेशन सुविधा में राजस्व साझाकरण मॉडल के साथ एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी के अंतर्गत कार्य कर रहा है। इसे सीएसआईआर इनोवेशन सेंटर फॉर नेक्स्ट जेनरेशन एनर्जी स्टोरेज सॉल्यूशंस (ICeNGESS) के रूप में स्थापित किया गया है, जिसमें प्रतिदिन 100 बैटरी उत्पादन की क्षमता है।

यंगस्टर ब्यूरो

THIS MONTH

1 October - International Coffee Day is celebrated on 1 October every year to recognize millions of people across the world from farmers, roasters, baristas, and coffee shop owners, etc. who do hard work to create and serve the beverage in the consumable form. *****

1 October - It is observed on October 7 globally to provide an opportunity to recognise the importance of cotton worldwide. *****

9 October - World Postal Day is celebrated on 9 October every year to raise awareness among people about the role of the postal sector for people and businesses every day. In 1874, the Universal Postal Union was established in Bern, Switzerland and its anniversary is declared as the World Postal Day by the Universal Postal Union Congress in Tokyo, Japan in 1969. *****

15 October - World Students' Day is observed on 15 October annually to mark the birth anniversary of A.P.J. Abdul Kalam. This day honours and pays respect to him and his efforts in the field of science and technology and also the role of the teacher that he played throughout his scientific and political careers. *****

Compilation:
Aditi Shukla

BASICS OF MEDIA

Medium Requirements: All content elements, production elements, and people needed to generate the defined process message. *****

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program. *****

Teleprompter: A prompting device that projects the moving (usually computer-generated) copy over the lens so that the talent can read it without losing eye contact with the viewer. Also called auto cue. *****

Production Schedule: The calendar that shows the reproduction, production, and postproduction dates and who is doing what, when, and where. *****

Program Proposal: Written document that outlines the process message and the major aspects of a television presentation. *****

Treatment: Brief narrative description of a television program. *****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rupali

World Animal Day 2022

World Animal Day is a day of action recognised worldwide for animal rights as well as welfare. It is celebrated on 4 October, Francis of Assisi feast day, the animals' patron saint.

The mission of this day is raising the status of animals to improve welfare standards worldwide. Building the celebration of this day brings together the animal welfare movement, and mobilises it to become a global force in making the world that we live in a better and safer place for all animals.

The World Animal Day is celebrated in various ways in every nation, irrespective of political ideology, faith, religion or nationality. Through increased awareness plus education, we are able to create a world whereby animals are always acknowledged as sentient beings plus full regard is constantly paid to their welfare.

Heinrich Zimmermann started the World Animal Day. On 24 March 1925, he organised the first-ever World Animal Day at Sports Palace located in Berlin, German. More than 5,000 people attended the first event. It was initially scheduled for 4 Oct to



align with Saint Francis of Assisi feast day, but the venue wasn't available on that very day. In 1929, the World Animal Day was moved to 4 Oct for the first time.

At first, he only found a following in Czechoslovakia, Switzerland, Austria and Germany. Every year, Zimmermann worked with great effort to promote the World

Animal Day. Eventually, in May 1931 while he was at the ISAR congress in Florence, Italy, Zimmermann's proposal to make 4 Oct World Animal Day internationally recognized, was unanimously accepted and it was adopted as a resolution.

-Youngster Bureau



Diwali- a festival of taking a pledge to make a self-reliant India

The five-day festival of Diwali celebrated in the month of Kartik has special significance in Indian culture. This is such a unique festival which is a confluence of two important aspects of life, Dharma and Artha. People of Hindu society are covered by the activities of this festival for economic upliftment. In the five-day festival, each day has a ritual, a story, economic-socio-religious-spiritual significance. The festival starts many days before with a massive campaign of cleanliness, cleaning, painting, new decorations start happening everywhere in the house, business establishment, office. In Treta Yuga, on the day of Deepawali i.e. Kartik Amavasya, Lord Sri Ramachandra came back to Ayodhya after completing 14 years of exile and killing Ravana, the demon king of Sri Lanka. Then the people of Ayodhya celebrated the festival by lighting lamps to welcome Rama.

In Dwapar Yuga, Lord Krishna killed the tyrannical demon Narakasura on Kartik Krishna Paksha Chaturdashi. The killing of this dastardly demon brought great joy to the common people and celebrated the festival by lighting a lamp. According to mythological texts, Lord Vishnu took the form of Narasimha and killed Hiranyakashipu on this day and on this day Shri Lakshmi ji appeared from the churning of the ocean.

This is the reason that on the day of Deepawali, there is a law for special worship of Goddess of wealth, Shri Lakshmi. It is derived from a mixture of two Sanskrit words Deep meaning Diya and Chain. The mention of Diwali festival is found in Padma Purana and Skanda Purana. In the 7th century Sanskrit play Nagananda, King Harsha has called this festival Pratipadutsava in which lamps were lit. In the 9th century, Rajasekhara

called it Deepmala in Kavya Mimamsa. Deepawali is actually a group of five festivals. The festival of Dhanteras comes two days before Deepawali. The day of Dhanteras is the most important day of the year for the business world because on this day people do not stop buying clothes, jewellery, utensils, new food, anything, huge crowd gathers for shopping.

Tulsi or a lamp is lit at the door of the house on this day. Narak Chaturdashi is the second day of Diwali. In North India, it is also called Chhoti Deepawali, it is believed that by this day the work of cleaning the house should be completed and preparations should be started to welcome Lakshmi ji. In South and Northeast provinces, crackers are burnt on this day. The third day i.e. Kartik Amavasya is the main day of Deepawali. On this day, there is a law to worship Shri Lakshmi and Ganesh ji.

Gandhi Jayanti 2022

Mahatma Gandhi was born on 2nd October 1869. He was a great man who changed the course of history. His philosophy of ahimsa, or nonviolence, has inspired millions around the globe. This day is celebrated across India to commemorate his birth anniversary.

Learn more about Mahatma Gandhi and the history and importance of Gandhi Jayanti. Mahatma Gandhi was born in Porbandar, Gujarat, to Karamchand Gandhi and Putlibai. His father, Karamchand Uttamchand Gandhi (1822–1885), was the dewan of Porbandar state.

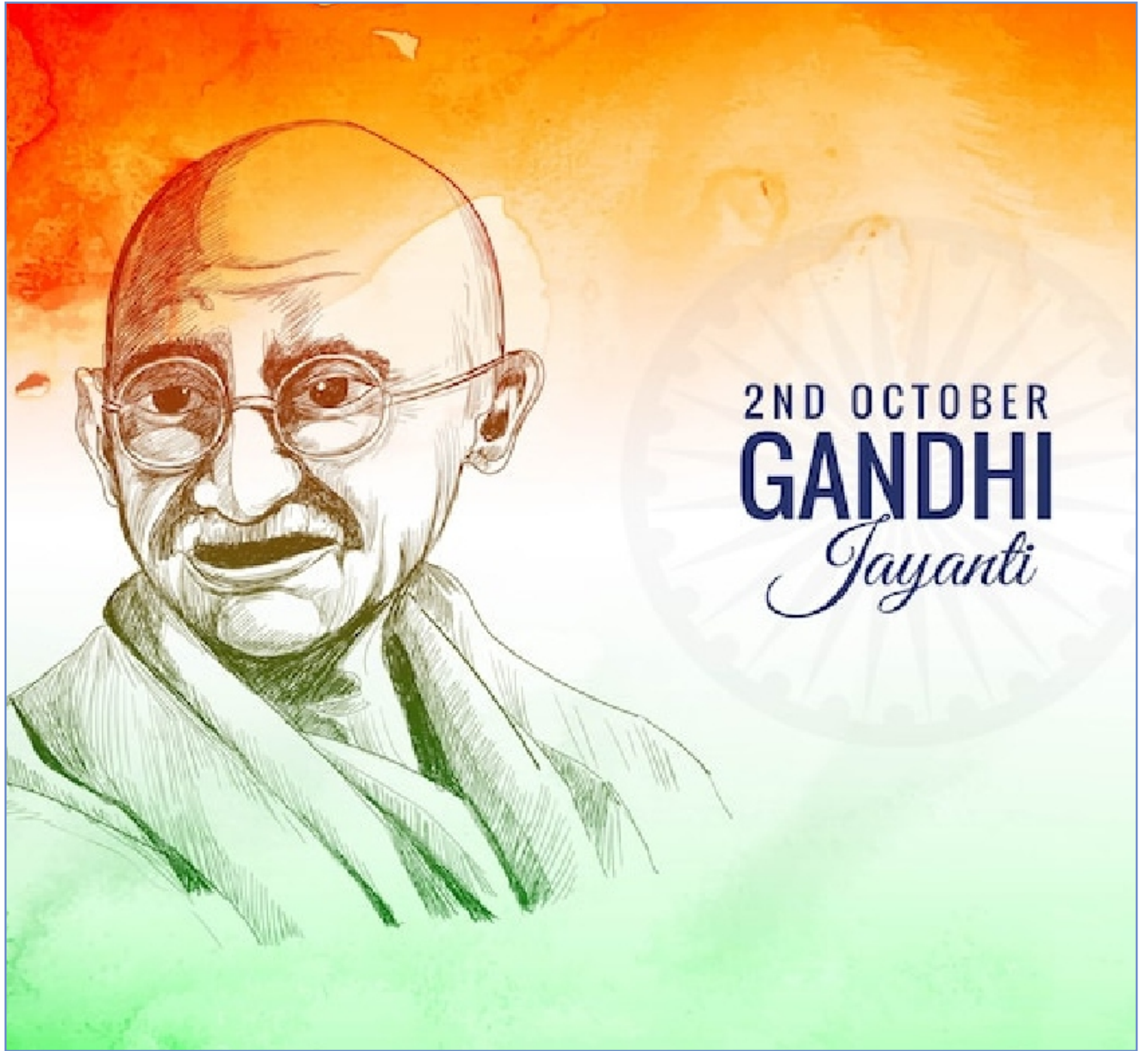
At the age of 13, Gandhi, in accordance with the regional tradition of the period, married Kasturbai Makhanji Kapadia, who was 14 at the time, in an arranged marriage in 1883.

When he was 18, Gandhi received his high school diploma in Ahmedabad in November 1887. He enrolled in Bhavnagar State's Samaldas College in January 1888, which at the time was the only college in the area that offered degrees.

A Brahmin priest and family friend named Mavji Joshiji suggested Gandhi to study law in London in 1888. The same year, his wife gave birth to their first living son, Harilal.

Gandhi's family was concerned about him moving to a foreign nation and leaving his wife and family. Gandhi vowed that he would refrain from eating meat, drinking wine, and dating women in order to persuade his wife and mother. With this, Gandhi's family gave him their blessings to continue his further education in London.

He studied law at London University for three years. He attended London's University College, where he practised law and jurisprudence at UCL



and was given the opportunity to enrol at Inner Temple in order to become a barrister. He returned to his homeland, India, in 1891.

In 1893, at the age of 23, Gandhi departed for South Africa, where he fought against racial injustice. He lived there for 21 years, honing his political principles, morals, and politics and finally returned to India in 1915.

In 2007, the United Nations General Assembly declared October 2 to be the International Day of Nonviolence in an effort to honour Gandhi's

strategies. Since then, 2nd October is being celebrated to honor and pay respects to the selfless freedom fighter. He was one of the most important people in the history of India and a beacon of hope in the world.

Mahatma Gandhi was assassinated on 30th January 1930 by Nathu Ram Godse. World leaders of several protests and movements have cited Gandhi in the years following his passing.

एचआर से है मीटिंग तो इन बातों का रखें ध्यान

किसी भी कंपनी का एचआर नियोक्ता और प्रबंधक के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। किसी भी व्यक्ति का किसी कंपनी में जॉइन होना या ना होना उस कंपनी के एचआर डिपार्टमेंट पर निर्भर करता है। इतना ही नहीं, किसी कर्मचारी के नियुक्त होने के बाद भी उसके प्रदर्शन पर एचआर की नजर रहती है। इसलिए यह जरूरी है कि आप एचआर टीम के साथ मीटिंग करते हुए कई छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसी ही कुछ जरूरी बातों के बारे में बता रहे हैं—

शब्दों पर दें ध्यान

जब भी आप एचआर से मिलते हैं तो ऐसे में जरूरी है कि आप अपने शब्दों का चयन बेहद ही सावधानीपूर्वक करें। किसी भी शब्द या वाक्य को कहने से पहले जरा रुक कर एक बार अवश्य सोचें। ऐसा कुछ न कहें जो आपके एचआर आपके बारे में नकारात्मक धारणा बनाने के लिए मजबूर करे। यह निश्चित रूप से लंबे समय में आपकी नौकरी को प्रभावित करेगा।

कंपनी के बारे में अपनी धारणा के बारे में खुला न रहें जरूरी नहीं है कि कंपनी की हर नीति के साथ आप



सहज हो। अगर आपको लगता है कि आपको कंपनी की नीतियों के साथ कुछ समस्याएं हैं और वे आपके काम को प्रभावित कर रहे हैं तो उन्हें एचआर के साथ संवाद करें। लेकिन अगर ऐसे मुद्दों में केवल विचारों का अंतर है तो एचआर को कभी भी इस बारे में ना कहें। इससे आपकी नेगेटिव इमेज बन सकती है और

इसका असर आपकी ग्रोथ पर भी दिखाई दे सकता है।

लॉन्ग टर्म प्लॉन ना करें डिस्कस यदि आप अपनी कंपनी को अलविदा कहने की योजना बना रहे हैं तो कभी भी किसी को इसके बारे में तब तक न बताएं, जब तक कि आपका दूसरी कंपनी में सलेक्शन नहीं हो जाता है। अगर एचआर से किसी को आपकी दूसरी नौकरी की तलाश करने की योजना के बारे में पता है, तो वे आपको अपने किसी भी प्रोजेक्ट में भागीदार नहीं बनाएंगे। हो सकता है कि आपका नई जगह पर सलेक्शन ना हो और इस कंपनी में भी आपकी छवि प्रभावित हो।

उन्हें अपनी पार्ट-टाइम जॉब के बारे में न बताएं

बहुत से लोग हैं जो ज्यादा पैसा कमाने के लिए कुछ पार्ट टाइम जॉब करते हैं। यदि आप उनमें से हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपकी कंपनी के एचआर को इसकी जानकारी नहीं है। अगर आपका सीनियर मैनेजर आपको कॉल करता है तो उसे अपनी पार्ट

टाइम जॉब के बारे में बताने का मतलब है कि आप अपनी वर्तमान जॉब से असंतुष्ट हैं। ऐसे में कंपनी एचआर आपको अपने एक राय कायम कर लेगा, जो यकीनन आपके हित में नहीं होगा।

यंगस्टर ब्यूरो

उत्सर्जन वृद्धि पर अंकुश लगाने की दिशा में भारत उठा रहा है सराहनीय कदम

कई अनुसंधान प्रतिवेदनों के माध्यम से अब यह सिद्ध किया जा चुका है कि वर्तमान में अनियमित हो रहे मानसून के पीछे जलवायु परिवर्तन का योगदान हो सकता है। कुछ ही घंटों में पूरे महीने की सीमा से भी अधिक बारिश का होना, शहरों में बाढ़ की स्थिति निर्मित होना, शहरों में भूकम्प के झटके एवं साथ में सुनामी का आना, आदि प्राकृतिक आपदाओं जैसी घटनाओं के बार-बार घटित होने के पीछे भी जलवायु परिवर्तन एक मुख्य कारण हो सकता है। एक अनुसंधान प्रतिवेदन के अनुसार, यदि वातावरण में 4 डिग्री सेल्सियस से तापमान बढ़ जाये तो भारत के तटीय किनारों के आसपास रह रहे लगभग 5.5 करोड़ लोगों के घर समुद्र में समा जाएंगे। साथ ही, चीन के शांघाई, शांटेयु, भारत के कोलकाता, मुंबई, वियतनाम के हनोई एवं बांग्लादेश के खुलना शहरों की इतनी जमीन समुद्र में समा जाएगी कि इन शहरों की आधी आबादी पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। वेनिस एवं पीसा की मीनार सहित यूनेस्को विश्व विरासत के दर्जनों स्थलों पर समुद्र के बढ़ते स्तर का विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। पूरे विश्व में उत्सर्जन वृद्धि के चलते जलवायु में भारी परिवर्तन महसूस किया जा रहा है। विकसित देशों ने आर्थिक प्रगति को गति देने के उद्देश्य से प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन किया है, जिससे उत्सर्जन वृद्धि अत्यधिक मात्रा में हो रही है। उत्सर्जन वृद्धि को नियंत्रित करने के उद्देश्य से वैश्विक स्तर पर कई उपाय किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। परंतु, विकसित देश जिन्हें इस ओर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए वे कम रुचि ले रहे हैं। वहीं दूसरी ओर भारत इस क्षेत्र में अतुलनीय कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है। दरअसल, वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के सम्बंध में हुए एक समझौते (पेरिस समझौता) के अन्तर्गत, संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देश, इस बात पर राजी हुए थे कि इस सदी के दौरे में वातावरण में तापमान में वृद्धि की दर को केवल 2 डिग्री सेल्सियस तक अथवा यदि सम्भव हो तो

इससे भी कम अर्थात 1.5 डिग्री सेल्सियस पर रोक रखने के प्रयास करेंगे। उक्त समझौते पर, समस्त सदस्य देशों ने, वर्ष 2015 में हस्ताक्षर किए थे। परंतु, कई सदस्य देश, इस समझौते को लागू करने की ओर कुछ कार्य करते दिखाई नहीं दे रहे हैं।

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (यूएनएफसीसीसी) को सूचना दिए जाने के लिए भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान या अपडेटेड नैशनली डिटर्मिण्ड कॉंट्रीब्यूशन्स (एनडीसी) को मंजूरी दी है। अपडेटेड एनडीसी, पेरिस समझौते के तहत आपसी सहमति के अनुरूप जलवायु परिवर्तन के खतरे का मुकाबले करने के लिए वैश्विक कार्रवाई को मजबूत करने की दिशा में भारत के योगदान में वृद्धि करने का प्रयास करता है। इस तरह के प्रयास, भारत की उत्सर्जन वृद्धि को कम करने के रास्ते पर आगे बढ़ने में भी मदद करेंगे। यह देश के हितों को संरक्षित करेगा और यूएनएफसीसीसी के सिद्धांतों व प्रावधानों के आधार पर भविष्य की विकास आवश्यकताओं की रक्षा करेगा।

भारत ने उत्सर्जन वृद्धि को कम करने के उद्देश्य से बहुत पहले (2 अक्टूबर 2015 को) ही अपने लिए कई लक्ष्य तय कर लिए थे। इनमें शामिल हैं, वर्ष 2030 तक वर्ष 2005 के स्तर से अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 30 से 35 प्रतिशत तक कम करना (भारत ने अपने लिए इस लक्ष्य को अब 45 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है), गैर-जीवाश्म आधारित ऊर्जा के उत्पादन के स्तर को 40 प्रतिशत तक पहुंचाना (भारत ने अपने लिए इस लक्ष्य को अब 50 प्रतिशत तक बढ़ा लिया है) और वातावरण में कार्बन उत्पादन को कम करना, इसके लिए अतिरिक्त वन और वृक्षों के आवरण का निर्माण करना, आदि। इन संदर्भों में अन्य कई देशों द्वारा अभी तक किए गए काम को देखने के बाद यह पाया गया है कि जी-20 देशों में केवल भारत ही एक ऐसा देश है जो पेरिस समझौते के अंतर्गत तय किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करता दिख रहा है। जी-20 वो देश हैं जो पूरे विश्व में वातावरण में 70 से 80 प्रतिशत तक उत्सर्जन फैलाते हैं। जबकि भारत आज इस क्षेत्र में काफी आगे निकल आया है एवं इस संदर्भ में पूरे विश्व का नेतृत्व करने की स्थिति में आ गया है। भारत ने अपने लिए वर्ष 2030 तक 550 बिलियन टन कार्बन का उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। भारत ने अपने लिए वर्ष 2030 तक 2.6 करोड़ हेक्टेयर बंजर जमीन को दोबारा खेती लायक उपजाऊ बनाने का लक्ष्य भी निर्धारित किया है। साथ ही, भारत ने इस दृष्टि से

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौहार्द संघि करते हुए 88 देशों का एक समूह बनाया है ताकि इन देशों के बीच तकनीक का आदान प्रदान आसानी से किया जा सके।

आज इस बात को समझना भी बहुत जरूरी है कि सबसे अधिक उत्सर्जन किस क्षेत्र से हो रहा है। भारत जैसे देश में जीवाश्म ऊर्जा का योगदान 70 प्रतिशत से अधिक है, जीवाश्म ऊर्जा, कोयले, डीजल, पेट्रोल आदि पदार्थों का उपयोग कर उत्पादित की जाती है। अतः वातावरण में उत्सर्जन भी जीवाश्म ऊर्जा के उत्पादन से होता है एवं इसका कुल उत्सर्जन में 35 से 40 प्रतिशत तक हिस्सा रहता है, इसके बाद लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा परिवहन साधनों के उपयोग के कारण होता है क्योंकि इनमें डीजल एवं पेट्रोल का इस्तेमाल किया जाता है। इन दोनों क्षेत्रों में भारत में बहुत सुधार देखने में आ रहा है। इस समय देश में सौर ऊर्जा की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा रही है। देश अब क्लीन यातायात की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। बिजली से चालित वाहनों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है एवं मेट्रोपॉलिटन शहरों में मेट्रो रेल का जाल बिछाया जा रहा है। स्मॉल बल्बों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा उज्ज्वला योजना के अंतर्गत ग्रामीण इलाकों में लगभग प्रत्येक परिवार में ईंधन के रूप में गैस के इस्तेमाल पर जोर दिया जा रहा है। इन सभी प्रयासों के चलते देश के वातावरण में उत्सर्जन के फैलाव में सुधार हो रहा है। यह सब अतुलनीय प्रयास कहे जाने चाहिए एवं भारत ने पूरे विश्व को दिखा दिया है कि उत्सर्जन के स्तर को कम करने के लिए किस प्रकार आगे बढ़ा जा सकता है।

भारत सरकार द्वारा देश में स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से कई प्रकार के नवोन्मेष निर्णय भी लिए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना को लागू करने से इस क्षेत्र में विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा में वृद्धि के साथ ही स्वच्छ ऊर्जा उद्योग (ऑटोमोटिव आदि) में कम उत्सर्जन वाले उत्पादों जैसे इलेक्ट्रिक वाहनों और कुशल उपकरणों का निर्माण व हरित हाइड्रोजन जैसी नवीन तकनीकों एवं ग्रीन जॉब्स में भी समग्र वृद्धि होगी। केंद्र सरकार एवं कई राज्य सरकारों ने इस सम्बंध में कई योजनाएं व कार्यक्रम भी शुरू किए हैं। जिसके अंतर्गत जल, कृषि, वन, ऊर्जा और उद्यम, निरंतर गतिशीलता और आवास, कचरा प्रबंधन, चक्रीय अर्थव्यवस्था और संसाधन दक्षता आदि सहित कई क्षेत्रों में सुधार करने की दृष्टि से इन योजनाओं व कार्यक्रमों के तहत उचित उपाय किए जा रहे हैं।

यंगस्टर ब्यूरो

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

Compilation:
Mithali

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners choose what they say;

Losers say what they choose.

Winners truly believe;

Losers only hope.

Winners are always part of the solution;

Losers are always part of the problem.

Winners have a mission;

Losers have excuses.

Winners maximize their strengths;

Losers dwell on their weaknesses.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Shivam

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: youngstertias@gmail.com